ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष -18 | अंक - 7 | जुलाई- I, 2017 | पाक्षिक | माउण्ट आबू | रु. 8.00

मूल्यनिष्ठ मीडिया दे सकती है दुनिया को सही दिशा

- समाज परिवर्तन का सशक्त माध्यम-मीडिया
- मूल्यों की फिसलन को थामने का सामर्थ्य ब्रह्माकुमारीज़ में - एन.के. सिंह
- कमी हमारी नीयत में नहीं, बल्कि ज्ञान में है, इस कमी को दूर करने का नेक नीयति से करें प्रयास

ज्ञानसरोवर। समय की मांग है कि ईश्वरीय ज्ञान का व्यापक प्रसार किया जाए। इससे ही जीवन आदर्शमय बन सकेगा। परमात्मा से जितना अधिक लोगों का जुड़ाव होगा उतनी ही उन्हें अधिक शक्ति प्राप्त होगी। ज्ञान व राजयोग के बल पर विश्व को परिवर्तित करना संभव होगा। उक्त बातें ब्रह्माकुमारीज़ की मुख्य प्रशासिका दादी जानकी ने ब्रह्माकुमारीज़ के मीडिया प्रभाग द्वारा आयोजित राष्ट्रीय महासम्मेलन को विडियो कॉन्फ्रेन्सिंग के माध्यम से सम्बोधित करते हुए कहीं। उन्होंने मीडिया कर्मियों का आह्वान करते हुए कहा कि वे ऐसे समाचार प्रसारित करें कि जिससे पूरी दुनिया को सही दिशा मिले। मीडियाकर्मी मूल्यों के प्रसार से जीवन परिवर्तन के इस महाअभियान में सशक्त माध्यम बन सकते हैं।

संस्था के महासचिव राजयोगी ब्र.कु. निर्वैर ने अपने विडियो संदेश में कहा कि तनाव भरे वातावरण में भले ही शांति का एहसास कठिन लगता है लेकिन मेडिटेशन का जीवन में समावेश करके सच्चा सुख प्राप्त किया जा सकता है। मीडिया कर्मियों को बड़े तपस्वी बताते हुए उन्होंने कहा कि तपस्या के बिना लेखन संभव ही नहीं है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि मेहमान बनकर आये मीडियाकर्मी ज्ञानसरोवर में ज्ञान की डुबकी लगाकर यहाँ से महान बनकर जायेंगे।

ब्रॉडकास्ट एडिटर्स एसोसिएशन के महासचिव एन.के. सिंह ने कहा कि भारत की प्रत्येक संस्था में जब पतन हो रहा है, तो मीडिया इससे कैसे अछूता रहता। दिक्कत यह है कि सूचना के अभाव के कारण मीडिया नैतिक दायित्व सही तरह से नहीं निभा पाता। मूल्यों में तेज़ी से हो रही फिसलन को थामने का सामर्थ्य ब्रह्माकुमारीज़ जैसी स्वयंसेवी संस्थाओं में है। हमें इनसे सहयोग करके टुकड़ों में बंट रहे समाज को सही दिशा देने की कठिन परीक्षा में खरा उतरना होगा। कमी हमारी नीयत में नहीं बल्कि ज्ञान में है, इस कमी को दूर करने का नेक नीयति से प्रयास करें। नीयत को ठीक करने के लिए समझ की आवश्यकता है, और वो समझ सिर्फ परमात्म ज्ञान के आधार से ही मिल सकती है, जिससे समाज में एक नया परिवर्तन आएगा। ये ऊर्जा हमें ऐसी संस्थाओं से ही मिलेगी। संस्था की संयुक्त मुख्य प्रशासिका दादी रतनमोहिनी ने अपने आशीर्वचन में मीडिया के कार्यों को उत्तम बताते हुए सत्य को परखने और दूसरों के दु:ख दूर करने में सहभागी बनने का आह्वान किया। उन्होंने मीडियाकर्मियों से कहा कि आपकी लेखनी समाज को राहत पहुँचाने वाली हो, अशांति फैलाने वाली नहीं। मीडिया प्रभाग के अध्यक्ष ब्र.कु. करुणा ने शारीरिक योगाभ्यास के साथ-साथ राजयोग अपनाकर मूल्यनिष्ठ बनने का मार्ग प्रशस्त करने का संदेश दिया। उन्होंने कहा कि मूल्यों के अभाव के कारण ही सामाजिक व प्रशासकीय जीवन में बुराइयाँ पनप रही हैं। परिस्थितियों में सुखद बदलाव लाने के लिए मीडियाकर्मियों को राजयोग के माध्यम से मनोबल व दृढ़ता जैसे गुण अपनाने का प्रयत्न करना चाहिए।

कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए दादी रतनमोहिनी, प्रो. कमल दीक्षित, ब्र.कु. करुणा, ब्र.कु. आत्मप्रकाश, ब्र.कु. शीलू, ब्र.कु. मृत्युंजय, ब्र.कु. गंगाधर, ब्र.कु. सुशांत, एन.के. सिंह, अनिल राय तथा अन्य।

न्यू वर्ल्ड इंडिया के प्रबंध निदेशक अनिल राय ने कहा कि लोकतंत्र के अन्य स्तम्भों की तुलना में मीडिया के पास संसाधनों का अभाव है। मीडियाकर्मी अपना भविष्य सुरक्षित नहीं महसूस करते। व्यवसायिक लाभ अर्जित करने के लिए नकारात्मकता को बढ़ावा दिया जा रहा है। यदि हम अपनी परेशानी जानने के लिए आत्मचिंतन करें तो उसका निवारण करना मुश्किल नहीं होगा। इस कार्य में मेडिटेशन सहायक बन सकता है। प्रेस परिषद के सदस्य राजीव रंजन नाग ने अपने सम्बोधन में कहा कि लोकतंत्र के चौथे स्तम्भ मीडिया को अपनी विश्वसनीयता कायम रखने के लिए स्वयं का आध्यात्मिक सशक्तिकरण कर मूल्यों को अपने कार्यक्षेत्र में अपनाना चाहिए। मीडिया के सामने मौजूद कठिन चुनौतियों के बारे में मूल्यानुगत मीडिया अभिक्रम समिति के संयोजक प्रो. कमल दीक्षित, लोकमत मुम्बई के समूह सम्पादक दिनकर राय, साक्षी मीडिया समूह हैदराबाद के सम्पादकीय निदेशक डॉ. के. रामचन्द्र मूर्ति ने भी उपस्थिति को सचेत किया। मीडिया प्रभाग के राष्ट्रीय संयोजक ब्र.कु. आत्मप्रकाश ने सम्मेलन में भाग ले रहे सभी मीडियाकर्मियों के प्रति आभार व्यक्त किया।

परमात्म ज्ञान से आता जीवन में संतुलन

ज्ञानसरोवर। गीता में परमात्मा द्वारा उच्चारित ज्ञान जीवन में संतुलन लाने की प्रेरणा देने वाला है। आज हर क्षेत्र में चाहे वह व्यापारी हो या अन्य, संतुलन न होने की वजह से न तो अपने स्वास्थ्य की ओर और न ही परिवार व समाज की ओर समय व ध्यान दे पाता है। विज्ञान हमें भौतिकता की अति में ले गया है। आज आध्यात्मिकता ही ऐसा समाधान नज़र आ रहा है जिससे सही मायने में जीवन संतुलित हो पायेगा। उक्त विचार **ब्रह्माकुमारीज़ के वैज्ञानिक एवं अभियंता प्रभाग द्वारा 'जीवन और कर्म में संतुलन' विषय पर आयोजित सम्मेलन** में हरियाणा विधानसभा के अध्यक्ष कंवर पाल ने व्यक्त किये।

ब्रह्माकुमारी संस्था की मुख्य प्रशासिका दादी जानकी ने विडियो कॉन्फ्रेन्सिंग द्वारा सम्बोधित करते हुए कहा कि साइलेंस की शक्ति से मन-बुद्धि व संस्कार अच्छी तरह कार्य करने लगते हैं। साइंस में बुद्धि का अभिमान है लेकिन साइलेन्स ने निमित्त व निर्माण का भाव जगाया है। मैं करता हूँ की भावना से तनाव होता है लेकिन करनकरावनहार ईश्वर है की भावना से निश्चिन्तता आती है।

एटॉमिक ऊर्जा विभाग के भारी जल बोर्ड,मुम्बई के अध्यक्ष ए.एन.वर्मा ने कहा कि जीवन यदि संतुलित नहीं तो सार्थक नहीं। उत्तरदायित्व वहन करना और सकारात्मक बने रहना आध्यात्मिकता का ही परिणाम है। रजत हांडा, महाप्रबंधक,मारूती उद्योग, गुरूग्राम ने कहा कि कार्य की अधिकता की वजह से उपजे तनाव के कारण उनका पारिवारिक जीवन बहुत अशांति से भर गया था। राजयोग का अभ्यास करने के पश्चात् आज कार्य की अधिकता के बाद भी अपने जीवन में संतुलन बना सकता हूँ। दिल्ली से आए डी.आर.डी.ओ., आई.एस.एस.ए. निदेशक एस.बी. तनेजा ने कहा कि तीव्रगति से बढ़ रही प्राकृतिक एवं मानवकृत आपदाओं के घटित होने से बिगड़ रहे पर्यावरण के स्वरूप को अपने मूल रूप में लाने के लिए अध्यात्म व विज्ञान को सामूहिक रूप से कारगर कदम उठाने की ज़रूरत है। संगठन के मीडिया प्रभाग के अध्यक्ष ब्र.कु. करुणा ने कहा कि केवल विज्ञान पर आधारित रहने से स्वयं की आंतरिक शक्तियाँ जागृत नहीं होती हैं। इसके लिए हर परिस्थिति में अध्यात्म का स्वयं में समावेश करना ही होगा। बड़ौदा ओ.एन.जी.सी. प्रबंध निदेशक पी.वी. खूबालकर ने कहा कि बढ़ती वैश्विक उष्णता के चलते प्रकृति का बिगड़ता स्वरूप मनुष्य की वैचारिक शक्ति का घातक परिणाम है। प्रकृति एवं मानव मस्तिष्क के बीच सकारात्मक संतुलन बनाए रखना चाहिए। प्रभाग के राष्ट्रीय संयोजक ब्र.कु. मोहन सिंघल ने कहा कि राजयोग से प्रकृति, स्वयं की सूक्ष्म व स्थूल कर्मेन्द्रियों पर नियंत्रण रखना सुगम होता है। वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका ब्र.कु. डॉ. निरंजना ने कहा कि आध्यात्मिक मनोविज्ञान राजयोग हमारी मानसिकता को ऊर्जावान बनाने में मदद करता है। ब्रह्माकुमारीज़ ठाणे सबज़ोन की संचालिका ब्र.कु.गोदावरी ने कहा कि ईश्वरीय स्मृति में किया गया कार्य श्रेष्ठ होने के कारण जीवन में संतुलन लाता है। ब्र.कु. पीयूष ने केन्द्रीय तकनीकी शिक्षा मंत्री डॉ.हर्षवर्धन, प्रभाग की अध्यक्षा ब्र.कु.सरला दीदी तथा अखिल भारतीय तेल बोर्ड के अध्यक्ष उत्पल वोरा का संदेश सभा में पढ़कर सुनाया।

सम्बोधित करते हुए प्रभाग के संयोजक ब्र.कु. मोहन सिंघल। मंचासीन हैं गणमान्य अतिथिगण।